**NAAC**
Accredited University

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

# परिसर प्रतिध्वनि

(नवोन्मेष, युवा ऊर्जा एवं अन्तःक्रिया का अभिव्यक्ति मंच)

मासिक भित्ति पत्रिका, अंक - 09, सितंबर 2025

University of Technology


| | | |
|---|---|---|
| प्रधान संरक्षक | - | श्रीमती मीनाक्षी सुराना |
| प्रमुख संरक्षक | - | डॉ. प्रेम सुराना |
| मुख्य संरक्षक | - | डॉ. अंशु सुराना |
| प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर) | - | प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन |
| वरिष्ठ सलहकार | - | प्रो. (डॉ.) अरविन्द कुमार अग्रवाल |
| प्रधान संपादक | - | प्रो. (डॉ.) अंकित गांधी |
| संपादक | - | डॉ. प्रेम कुमार |
| सह-संपादक | - | प्रो. (डॉ.) मोनिका शर्मा, डॉ. भाग्यश्री खरे |
| खेल संपादक | - | श्री यश यादव |

## प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर) महोदया का संदेश ...

भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' के नवें अंक के प्रकाशन पर मैं आप सभी को हृदय से शुभकामनाएँ देती हूँ। यह पत्रिका हमारे विश्वविद्यालय के शैक्षिक, सांस्कृतिक और रचनात्मक जीवन की झलक प्रस्तुत करती है। इसमें हमारे विश्वविद्यालय के समस्त शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों की प्रतिभा, विचारशीलता और अभिव्यक्ति की शक्ति साकार रूप लेती है। मुझे प्रसन्नता है कि यह पत्रिका निरंतर न केवल ज्ञान-विस्तार का माध्यम बन रही है, बल्कि परिसर के विविध आयामों को भी प्रतिध्वनित कर रही है। लेखन, चिंतन और अभिव्यक्ति की यह परंपरा हम सभी के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मैं अपेक्षा करती हूँ कि 'परिसर प्रतिध्वनि' इसी प्रकार आने वाले समय में भी उत्साह, नवाचार और सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती रहेगी और हमारे शैक्षणिक परिवार की एक मजबूत कड़ी बनी रहेगी।

संपादकीय टीम एवं सभी सहयोगियों को इस सराहनीय प्रयास के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ...

**प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन**
प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर)
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

## वरिष्ठ सलाहकार महोदय की कलम से...

भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' के नवें अंक के प्रकाशन पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। यह पत्रिका न केवल हमारे परिसर की गतिविधियों, सृजनात्मक उपलब्धियों और शैक्षणिक वातावरण का दर्पण है, बल्कि हम सभी की प्रतिभा, कल्पनाशक्ति और अभिव्यक्ति का सशक्त मंच भी है। ज्ञान और रचनात्मकता का संगम ही किसी संस्थान की वास्तविक पहचान होता है। इस पत्रिका के माध्यम से विश्वविद्यालय परिवार के सदस्य अपनी विचारधारा को शब्दों में ढालकर न केवल स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं, बल्कि अपने साथियों और पाठकों को भी प्रेरणा प्रदान करते हैं। मुझे विश्वास है कि 'परिसर प्रतिध्वनि' का यह अंक भी पाठकों के मन को छुएगा और उनके बौद्धिक क्षितिज को विस्तृत करेगा।

इस पत्रिका के संपादकीय मण्डल, सहयोगी शिक्षकों तथा योगदान देने वाले सभी कर्मचारियों का मैं हृदय से अभिनंदन करता हूँ और आशा करता हूँ कि आने वाले समय में भी यह पत्रिका नित्य नवीन ऊँचाइयों को प्राप्त करेगी।

शुभकामनाओं सहित...

**प्रो. (डॉ.) अरविन्द अग्रवाल**
वरिष्ठ सलाहकार
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

## संपादकीय ...

प्रिय पाठकों,

हमें यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि 'परिसर प्रतिध्वनि' अपने नवें अंक के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है। किसी भी संस्थान की भित्ति पत्रिका केवल विचारों का संग्रह नहीं होती, बल्कि वह उस परिसर की धड़कनों को स्वर देने का माध्यम होती है। यहाँ छपे शब्द समस्त विश्वविद्यालय परिवार की संवेदनाओं, कल्पनाओं और रचनात्मकता की जीवंत गवाही होते हैं। इस अंक में हमने कोशिश की है कि परिसर की बहुरंगी गतिविधियों, सभी की सृजनात्मक अभिव्यक्तियों और समाज से जुड़े प्रासंगिक मुद्दों को स्थान मिले। लेख, कविताएँ, आलेख, लघु कथाएँ और रिपोर्ट्स के माध्यम से आप पाएँगे कि हमारे विश्वविद्यालय के सभी सदस्य न केवल ज्ञानार्जन में अग्रसर हैं, बल्कि समाज और संस्कृति के प्रति सजग दृष्टि भी रखते हैं।

'परिसर प्रतिध्वनि' का उद्देश्य हमेशा यही रहा है कि यह हर सदस्य की आवाज़ बने। कभी प्रेरणा दे, कभी आत्ममंथन कराए, तो कभी नए सपनों को पंख लगाए। हमें विश्वास है कि यह अंक भी आपके मन को छुएगा और चिंतन की नई दिशाएँ खोलेगा। अंत में, हम अपने सभी सहयोगियों, लेखकों और पाठकों का आभार व्यक्त करते हैं, जिनके योगदान और प्रोत्साहन से यह यात्रा निरंतर आगे बढ़ रही है। आपकी सहभागिता ही हमारी सबसे बड़ी ताक़त है।

आप सभी को सादर समर्पित...

**नोट:**
आप सभी से निवेदन है कि अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव हमें अवश्य दें, जिससे आगामी अंकों को और अधिक प्रभावशाली व उपयोगी बनाया जा सके।

**डॉ. प्रेम कुमार**
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

## राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में तीन दिवसीय खेल सप्ताह का शुभारंभ

राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में तीन दिवसीय खेल सप्ताह का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। यह आयोजन फिट इंडिया मिशन 2025 के अंतर्गत 29 से 31 अगस्त तक संपन्न होगा। उप-कुलाध्यक्ष डॉ. अंशु सुराना ने अपने संदेश में कहा- "खेल जीवन में ऊर्जा, उत्साह और नेतृत्व के गुणों को विकसित करते हैं। शिक्षा के साथ-साथ खेलों को भी समान महत्व देना चाहिए। विद्यार्थी हर दिन खेल और व्यायाम के लिए समय निकालें, ताकि वे शारीरिक व मानसिक रूप से मजबूत बन सकें।"

कुलपति डॉ. रश्मि जैन ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा – "एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। हमें डिजिटल दुनिया तक सीमित न रहकर सक्रिय जीवनशैली अपनानी चाहिए। खेल अनुशासन, समर्पण, टीम भावना और आत्मविश्वास का विकास करते हैं।" उप-कुलपति डॉ. अंकित गांधी ने कहा- "राष्ट्रीय खेल दिवस न केवल हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद जी को श्रद्धांजलि का दिन है, बल्कि यह हमें स्मरण भी कराता है कि खेल हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए। विद्यार्थी खेलों को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाकर 'फिट इंडिया मिशन 2025' को सार्थक बनाएं".

परीक्षा नियंत्रक डॉ. कमल किशोर जांगिड़ ने कहा– “खेल सिर्फ जीत या हार नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला हैं। ‘खेलेगा इंडिया, तभी खिलेगा इंडिया’ हर विद्यार्थी का जीवन मंत्र होना चाहिए।”

कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा ने कहा – “खेल मानसिक और शारीरिक संतुलन के साथ-साथ नेतृत्व और जीवन कौशल भी सिखाते हैं। फिट इंडिया मिशन स्वस्थ भारत निर्माण का महत्वपूर्ण प्रयास है।” डॉ. सीताराम माली ने सभी विद्यार्थियों एवं स्टाफ को फिट इंडिया मिशन 2025 की शपथ दिलाई।”

खेल निदेशक श्री यश यादव ने जानकारी दी – “खेल सप्ताह में वॉलीबॉल, कैरम, टेबल टेनिस, खो-खो, कबड्डी, रस्साकशी, रोप स्किपिंग, सतोलिया एवं अन्य पारंपरिक खेल शामिल हैं। उद्घाटन समारोह के उपरांत विभिन्न प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों एवं स्टाफ ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।” इस अवसर पर सभी अधिष्ठाता, संकाय सदस्यगण, प्रशासनिक अधिकारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे और आयोजन को सफल बनाने में योगदान दिया।

## यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाया गया

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में दिनांक 15 सितम्बर 2025 को राष्ट्रीय हिंदी दिवस बड़े उत्साह और गरिमामय वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार ने हिंदी भाषा के महत्व को स्मरण करते हुए विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना के साथ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष डॉ. प्रेम सुराना ने अपने उद्घाटन संबोधन में हिंदी को केवल संवाद की भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, सभ्यता और पहचान का प्रतीक बताया।

विश्वविद्यालय की कुलगुरु आचार्य (डॉ.) रश्मि जैन ने अपने संबोधन में हिंदी भाषा को भारतीय संस्कृति और एकता की आत्मा बताते हुए कहा कि हिंदी केवल संचार का माध्यम ही नहीं बल्कि हमारी पहचान और गौरव का प्रतीक है।

वरिष्ठ आचार्य एवं सलाहकार आचार्य (डॉ.) अरविन्द कुमार अग्रवाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज के तकनीकी युग में हिंदी भाषा को डिजिटल माध्यमों में और अधिक सशक्त बनाने की आवश्यकता है।

कृषि विद्यापीठ के अधिष्ठाता आचार्य (डॉ.) एस. एस. यादव ने अपने वक्तव्य में हिंदी को विश्वस्तरीय पहचान दिलाने के लिए युवाओं को प्रेरित किया। वहीं, डॉ. प्रेम कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी आज के डिजिटल युग में तेजी से उभर रही है और इसमें रोजगार तथा अनुसंधान की अपार संभावनाएँ हैं।

इस अवसर पर हिंदी कविता-पाठ, निबंध और चित्रकारी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतिभागियों ने हिंदी की महत्ता, आधुनिक युग में हिंदी की उपयोगिता तथा मातृभाषा के संवर्धन पर अपने विचार प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किए।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सीता राम माली (विभागाध्यक्ष, मानविकी, कला एवं सामाजिक विज्ञान विभाग) ने प्रस्तुत किया। उन्होंने सभी को हिंदी को जीवन के हर क्षेत्र में अपनाने और सम्मान देने का संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में राष्ट्रीय हिंदी दिवस का यह आयोजन प्रेरणादायी और सफल रहा।

## यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस मनाया गया

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर दिनांक 10 सितंबर 2025 को 'विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस' के विषय में विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए  विशेष शिक्षा विभाग में आचार्य वंदना सिंह ठाकुर (अधिष्ठाता, विशेष शिक्षा विद्यापीठ) की अध्यक्षता में गतिविधि आधारित व्याख्यान कालांश का आयोजन किया गया। जिसका सफल संचालन डॉ. माया बोहरा (Clinical psychologist) द्वारा किया गया। इस कालांश में विद्यार्थियों सहित विशेष शिक्षा विभाग के सभी प्राध्यापक भी उपस्थित रहे। इस कालांश के अंतर्गत डॉ. माया बोहरा द्वारा आत्महत्या संबंधित विभिन्न प्रकार की जानकारियां (जैसे- आत्महत्या के कारण, आत्महत्या करने वाले व्यक्ति की पहचान चिन्ह तथा उन्हें रोकने के उपाय  इत्यादि )बड़े ही रोचक तरीके से प्रस्तुत की गई।

इस कालांश में डॉ. माया बोहरा द्वारा अपने विचारों की प्रस्तुतीकरण के साथ बालकों के मन में छिपे विभिन्न विचारों को जानने के लिए विधार्थियों के अलग अलग ग्रुप बनाकर विभिन्न प्रकार की गतिविधियां करवाई गयी जैसे- पोस्टर प्रतियोगिता, चित्र प्रतियोगिता, विचार अभिव्यक्ति  प्रतियोगिता इत्यादि। इस कालांश के दौरान डॉ. माया बोहरा द्वारा आत्महत्या करने वाले लोगों की जानकारी देने के लिए कुछ हेल्पलाइन नंबर भी

बताए गए तथा ऐसे लोगों की मदद करने के लिए हमेशा सजग रहने के निर्देश दिए गए। इस कालांश के अंत में आचार्य वंदना सिंह ठाकुर ने विद्यार्थियों द्वारा की गई गतिविधियों का मूल्यांकन किया गया तथा विद्यार्थियों को इस संबंध में जागरूक रहने हेतु मार्गदर्शित किया गया।

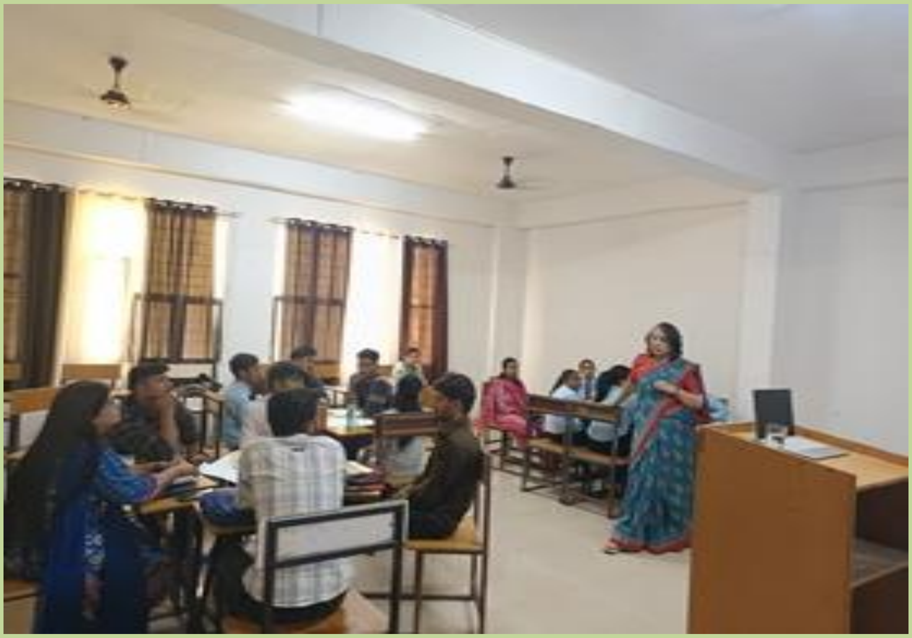

अंत में विद्यार्थियों ने डॉक्टर माया बोहरा द्वारा दिये गए व्याख्यान का प्रशंसनीय शब्दों मे फीडबैक देते हुए अन्य लोगो को भी जागरूक करने का प्रण लिया। इस कार्यक्रम के अंत में डॉ. अंशु सुराना (उप-कुलाध्यक्ष) ने इस कार्यक्रम की प्रशंसनीय शब्दों में सराहना की तथा उन्होंने बताया कि आत्महत्या एक अभिशाप है ऐसे अपराधो के प्रति हमें हमेशा सचेत रहना चाहिए 1

इस व्याख्यान कार्यक्रम में आचार्य (डॉ.) रश्मि जैन (कुलगुरु) ने बताया की हम आत्महत्या जैसे शब्द को नकारात्मक मानते है अत: इस संबंध में बात करना अनुचित मानते हैं जबकि हमें इस संबंध में बात करके सभी को सचेत करना चाहिए। इस प्रकार सभी लोगों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये । इस प्रकार विशेष शिक्षा विभाग में डॉक्टर माया बोहरा द्वारा दिए गए एक बेहतरीन व जागरूक व्याख्यान का समापन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

## पुस्तकालय का रहस्य

शहर के बीचों-बीच एक बहुत पुराना पुस्तकालय था। ऊँची-ऊँची अलमारियों में रखी किताबें मानो चुपचाप अपनी कहानियाँ सुनाने को तैयार रहतीं। लेकिन अब वहाँ बहुत कम लोग आते थे। बच्चों को किताबों से ज़्यादा मोबाइल और टीवी पसंद आने लगे थे। एक दिन, बारिश से बचने के लिए रीना नाम की लड़की उस पुस्तकालय में चली गई। वहाँ का सन्नाटा उसे अजीब-सा अच्छा लगा। जब वह अलमारियों के बीच चल रही थी, तभी एक पुरानी किताब नीचे गिर पड़ी। रीना ने उसे उठाया और खोला। किताब के अंदर एक पुराना कागज़ छिपा हुआ था, जिस पर लिखा था – "ज्ञान ही असली खजाना है, जो यहाँ हर पन्ने पर छुपा है।"

रीना मुस्कुराई और धीरे-धीरे पढ़ने लगी। जैसे-जैसे वह पन्ने पलटती, उसे लगता कि वह किसी नए संसार में प्रवेश कर रही है। अगले दिन उसने अपनी सहेलियों को भी वहाँ बुलाया। धीरे-धीरे बच्चे फिर से पुस्तकालय आने लगे। पुराना पुस्तकालय, जो कभी सूना पड़ा था, अब बच्चों की हँसी और किताबों की सरसराहट से जीवंत हो उठा। क्या आप चाहेंगे कि मैं इस कहानी को और भी प्रेरणादायक बनाऊँ ताकि यह छात्रों के लिए सीख देने वाली लगे?

**श्री जितेन्द्र कुमार योगी**
पुस्तकालयाध्यक्ष, केन्द्रीय पुस्तकालय
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर

## नारी की पहचान

ना समझो कमज़ोर उसे जो चुपचाप सहती है,
वो आँधियों में भी अपने हक़ की बात कहती है।

हर दर्द को मुस्कान में बदलना आता है उसे,
चट्टानों से टकरा कर भी चलना आता है उसे।

कलम उठाए तो इंक़लाब लिख देती है,
और चाह ले तो इतिहास रच देती है।

नारियों को अब नज़रों से न आँको,
वो आग भी है, और चाँदनी भी बाँटो।

वो माँ भी है, वो शक्ति भी है,
हर रिश्ते में छिपी भक्ति भी है।

मत रोकों उसे उड़ान भरने से,
अब वो थमेगी नहीं किसी दर पे डरने से

- **डॉ. भाग्यश्री खरे**

# हौसलों की उड़ान

## (अरुणिमा सिन्हा की संघर्षगाथा)

वह एक आम लड़की नहीं थी, उसके सपनों में ऊँचाइयाँ थीं – और जब किस्मत ने उसे ज़मीन पर पटकने की कोशिश की, तो उसने आसमान छू लेने की ठान ली। अरुणिमा सिन्हा, एक राष्ट्रीय स्तर की वॉलीबॉल खिलाड़ी थीं। एक दिन, वर्ष 2011 में, उन्होंने पद यात्रा के लिए एक ट्रेन पकड़ी। लेकिन कुछ बदमाशों ने उनसे चैन छीनने की कोशिश की। जब अरुणिमा ने विरोध किया, तो उन्हें चलती ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया। अगले ही पल, एक और ट्रेन उनके ऊपर से गुज़र गई। जब अरुणिमा को होश आया, तो उनके एक पैर को काटना पड़ा, और शरीर में कई गंभीर चोटें थीं। एक सामान्य इंसान शायद टूट जाता, लेकिन अरुणिमा ने उस पल को नई ज़िंदगी की शुरुआत बना लिया।

अस्पताल में ही उन्होंने ऐलान किया – "अब मैं माउंट एवरेस्ट फतह करूंगी।" सभी को यह सपना नामुमकिन लगा, लेकिन अरुणिमा के इरादे किसी पर्वत से कम न थे। उन्होंने दिव्यांगता को कमजोरी नहीं, बल्कि अपनी ताकत बनाया। उन्होंने पर्वतारोहण की कठिन ट्रेनिंग शुरू की, और महज़ दो साल के भीतर, 2013 में माउंट एवरेस्ट पर तिरंगा लहराकर इतिहास रच दिया। वे दुनिया की पहली महिला दिव्यांग पर्वतारोही बनीं, जिन्होंने एवरेस्ट फतह किया।

इसके बाद अरुणिमा ने अफ्रीका का किलिमंजारो, रूस का एल्ब्रुस, ऑस्ट्रेलिया का कोज़ियोस्को जैसे कई अन्य शिखरों को भी फतह किया। आज वे न केवल एक प्रेरक वक्ता हैं, बल्कि दिव्यांगों के लिए आशा की मिसाल बन चुकी हैं। उनकी आत्मकथा *'Born Again on the Mountain'* दुनिया को बताती है कि जब हौसले बुलंद हों, तो कोई भी चोट जीवन की राह नहीं रोक सकती। शरीर की एक टांग चली गई, पर हौसलों के पंख उग आए – और अरुणिमा सिन्हा उड़ चलीं वहाँ, जहाँ सिर्फ सूरज पहुंचता है।

**श्री हसन दीन खान**
सहायक आचार्य, विशेष शिक्षा विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर

## हुचचम्मा चौधरी : शिक्षा के लिए प्रेरणादायी त्याग

समाज की प्रगति के लिए शिक्षा एक मजबूत आधार होती है, और कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो अपने निःस्वार्थ योगदान से इस नींव को और भी मजबूत बना देते हैं। हुचचम्मा चौधरी, एक 68 वर्षीय महिला, ऐसी ही एक प्रेरणादायी हस्ती हैं जिन्होंने कर्नाटक में अपने गांव के बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए अपनी दो एकड़ ज़मीन दान कर दी। यह ज़मीन अब एक सरकारी स्कूल की स्थापना के लिए उपयोग की जा रही है। कर्नाटक राज्योत्सव के अवसर पर राज्य सरकार ने हुचचम्मा के इस महान योगदान को सम्मानित किया। यह केवल भूमि का दान नहीं था, बल्कि उनके हृदय में गहराई से बसी उस भावना का प्रतीक था, जो शिक्षा को एक परिवर्तनकारी शक्ति मानती है। उन्होंने यह कदम किसी स्वार्थ या प्रशंसा की चाह में नहीं उठाया, बल्कि गांव के बच्चों को पढ़ने-लिखने और आगे बढ़ने का अवसर देने के लिए उठाया।

हुचचम्मा का यह त्याग विशेष रूप से सराहनीय है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि आज भी जीवनयापन का मुख्य साधन मानी जाती है। फिर भी उन्होंने अपने जीवन की कमाई को समाज के भविष्य के लिए समर्पित कर दिया। उनका यह कार्य हमें यह सिखाता है कि सेवा और परोपकार के लिए केवल संसाधन नहीं, बल्कि इच्छाशक्ति और संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है। उनका समर्पण यह संदेश देता है कि जब एक सामान्य नागरिक भी शिक्षा के लिए खड़ा होता है, तो समाज में बड़ा परिवर्तन संभव होता है। हुचचम्मा चौधरी का योगदान आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगा। उनका यह बलिदान न केवल शिक्षा की ज्योति जलाएगा, बल्कि यह भी दर्शाएगा कि सच्चा विकास तभी संभव है जब समाज के हर वर्ग को शिक्षा का अधिकार मिले।

**- अंजलि खरे**

## दस प्रेरणास्पद संस्कृत श्लोक (विभिन्न ग्रंथों से)

**(विद्यार्थियों के उत्साह और प्रेरणा के लिए अचूक हैं)**

1. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः। न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।

अर्थः मेहनत से ही कार्य सिद्ध होते हैं; इच्छाएँ पर्याप्त नहीं होतीं—जैसे सिंह सोते समय हिरण उसके पास नहीं आता।

2. विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्; पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्मं ततः सुखम्।

अर्थः शिक्षा विनम्रता देती है; विनम्रता से पात्रता; पात्रता से धन; धन से धर्म और अंततः सुख।

3. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

अर्थः तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने में है, फल में नहीं—फल की आशा छोड़ो।

4. उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।

अर्थः जागो, उत्तिष्ठो, श्रेष्ठों से ज्ञान ग्रहण करो।

5. आलस्यस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम्। अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतो सुखम्।

अर्थः आलस्य से ज्ञान नहीं मिलता, बिना ज्ञान धन नहीं, बिना धन मित्र नहीं, बिना मित्र सुख नहीं मिलता।

6. न चौरहार्यं न च राजहार्यं... व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।

अर्थः ज्ञान वह संपत्ति है जिसे कोई चुरा नहीं सकता, और यह खर्च करने पर बढ़ती है—यह धनों का प्रमुख है।

7. सुखार्थिनः कुतो विद्या, विद्यार्थिनः कुतः सुखम्। सुखार्थी वा त्यजेत् विद्या, विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्।

अर्थः आराम चाहने वाला ज्ञान नहीं पाता; ज्ञान चाहने वाला सुख नहीं पाता।

8. ॐ सह नाववतु... तेजस्विनावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै।

अर्थः "हम दोनों (गुरु और शिष्य) सुरक्षित रहें, हमें शक्ति मिले, हमारा अध्ययन प्रकाशपूर्ण हो, और हम एक-दूसरे के शत्रु न हों।" (पढ़ाई प्रारंभ में उपयोगी)

9. पुस्तकस्था तु या विद्या, परहस्ते च यद् धनम्... न सा विद्या न तद् धनम्।

अर्थः जो ज्ञान केवल पुस्तकों में है, और धन दूसरे के हाथों में है—जब समय आए, तो वे उपयोगी नहीं।

10. शनैः पन्थाः... शनैर्विद्या शनैर्वित्तं... पञ्चैतानि शनैः शनैः।

अर्थः रास्ता धीरे–धीरे चलता है, पर्वत धीरे–धीरे चढ़ा जाता है, शिक्षा और धन धीरे–धीरे प्राप्त होते हैं—ये पाँचों धीरे-धीरे होते हैं।

**श्री राजनारायण शर्मा**
सहायक आचार्य, विधि विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर